❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 41, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 नवम्बर, 2017 से रविवार 12 नवम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जम्मू-कश्मीर : अधिक स्वायत्तता की वकालत के मायने

...जिस समय देश के सभी राजनैतिक दलों को आपसी मतभेद भुलाकर इस तरह के देश विरोधी कृत्यों की निन्दा व आलोचना के साथ उन्हें शख्त सन्देश देने की जरूरत थी जिस समय केन्द्र की ओर से कश्मीर में सभी पक्षों के लिए नियुक्त वार्ताकार दिनेश्वर शर्मा की राह आसान करनी चाहिए थी ऐसे समय में चिदम्बरम का बयान क्या देश हित में होगा? ....

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम ने कश्मीर के लिए और अधिक स्वायत्तता की वकालत की है। कश्मीर में आतंकी हमलों और मजहबी जुनून में जलते चिनारों के बीच यह बयान कितनी और आग लगा लगा सकता है, अभी कहा कुछ नहीं जा सकता। किन्तु इस बयान से कांग्रेस पार्टी सकते में जरूर आ खड़ी हुई है। दरअसल पी. चिदंबरम पार्टी में कोई छोटे-मोटे या स्थानीय कार्यकर्ता नहीं है वह देश के कई बड़े संवैधानिक पदों पर रहे हैं साथ ही उनकी गिनती देश के बड़े जाने-माने सुप्रसिद्ध वकीलों में भी होती है। उनका यह बयान उनकी पार्टी का कितना लाभ करेगा यह तो अभी सुनिश्चित नहीं है किन्तु ऐसे बयान विश्व पटल पर एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र के रूप में उभरे भारत को जरूर हानि पहुंचा सकते हैं।

अक्सर घाटी से वहां के क्षेत्रीय नेताओं द्वारा स्वायतता सम्बन्धी बयान आते-जाते रहे हैं। लेकिन इस बार देश की प्रमुख पार्टी की ओर से यह बयान आना कहीं न कहीं राजनीति का नया रंग दिखा रहा है, हालाँकि इससे अधिक स्वायत्तता कितनी? इसका कोई निर्धारित मापदंड का मसौदा उनकी ओर से पेश नहीं किया गया। जबकि चिदम्बरम एक वकील हैं और वह जानते हैं कि संविधान के प्रथम अनुच्छेद में ही कहा गया है कि "भारत, राज्यों का एक संघ होगा। इकहरी नागरिकता होगी, संघ और राज्यों के लिए एक ही संविधान होगा, एकीकृत न्याय-व्यवस्था होगी। मसलन एक नागरिकता, एक संविधान, एक न्यायप्रणाली लेकर जन्में गणतंत्र भारत को एक राष्ट्र के रूप में जाना जाता है।" लगभग 29 राज्य इकाइयों को जोड़कर बने देश में जम्मू-कश्मीर भी भारत की एक राज्य इकाई के रूप में जाना जाता है। अब यदि बात स्वायत्तता की करें तो भारत का एक नागरिक होने के नाते मुझे इतनी स्वायत्तता नहीं है जितनी एक कश्मीरी को, एक कश्मीरी नागरिक को भारत में वह सब अधिकार प्राप्त हैं जो मुझे है, आपको हैं। किन्तु एक भारतीय नागरिक होने के नाते हमें उतने अधिकार कहाँ हैं जितने एक कश्मीरी नागरिक को? कश्मीर की राजकीय नागरिकता से लेकर अचल सम्पत्ति तक में क्या किसी अन्य भारतीय को अधिकार प्राप्त है? दूसरा,

क्या कोई नागरिक भारतीय सेना पर पथराव कर सकता है? देश विरोधी नारे लगा सकता है? खुलेआम आतंकवादियों के झंडे लहरा सकता है और कितनी स्वायत्तता चाहिए? स्वायत्तता की भी कोई सीमा होती है न?

इस कारण स्वायत्तता का सवाल ही यहाँ बेमानी है, हाँ स्वायत्तता का मुद्दा हो सकता है लेकिन वह मुद्दा पाक परस्ती में लगी घाटी की मजहबी तंजीमों के लिए होगा, सत्ता के लिए लालायित वहां के राजनैतिक दलों के लिए होगा। पर किंचित ही भारत की अखंडता को अक्षुण बनाये रखने की शपथ लेकर कम से कम 60 वर्ष सत्ता सुख भोगने वालों के लिए नहीं होगा? कहते हैं दुनिया का इतिहास अप्रत्याशित घटनाओं से भरा हुआ है। आज धरती पर हर जगह राष्ट्र राज्य मौजूद है पर ऐसा हमेशा से नहीं रहा है। अभी कुछ शताब्दी पहले ही यह विश्व राजसत्ताओं का विश्व था लेकिन अचानक फ्रांस की क्रांति होती है और सारे विश्व में लोकतान्त्रिक राष्ट्र राज्यों का उदय होने लगता है। अगर इन देशों का उदय अचानक हो सकता है तो इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए की भविष्य में कभी अचानक कोई देश खत्म भी हो सकता है। स्पेन से केटोलेनिया, इराक से कुर्दिस्तान, पाकिस्तान से बलूचिस्तान समेत कई देशों में नये राष्ट्रों के उदय की किरण को भविष्य में अनदेखा नहीं किया जा सकता।

हालाँकि वर्तमान में हमारी राष्ट्रीय आस्था और सरकार इतनी कमजोर नहीं है कि एक या दो बयानों से वह राष्ट्र के बीच लकीर खींच दे किन्तु हमें भूलना नहीं चाहिए इस दुखद हादसे से हम पूर्व में पाकिस्तान के रूप में गुजर चुके हैं। इसके बाद 80 का दशक भी हमारे लिए उतना अच्छा नहीं रहा खालिस्तान का आंदोलन 1980 के दशक से शुरु हुआ और भारत विरोधी इस हिंसक आंदोलन में हजारों लोगों को अपनी जानें गंवानी पड़ीं थीं। चरमपंथ का वह लम्बा दौर जो 1990 के शुरुआती सालों तक चला। जिसमें हमने हजारों मासूम लोगों के साथ देश की एक तत्कालीन प्रधानमंत्री को भी खोया था जिसकी हम कल परसों पुण्यतिथि मना रहे थे। शायद इस तरह के बयान और देश को तोड़ने वाली शक्तियों को राजनैतिक संरक्षण मिलने के कारण ही पिछले दिनों पंजाब में देश विरोधी ताकतें एक बार फिर सर उठाने लगी हैं, कुछ समय पहले ही पंजाब में एक बार फिर करीब 40 जगहों पर आजादी की मुहीम को हवा देने के लिए कुछ पोस्टर लगाए गए थे। जिनमें खालिस्तान समर्थकों ने जनमत संग्रह की मांग की थी।

जिस समय देश के सभी राजनैतिक दलों को आपसी मतभेद भुलाकर इस तरह के देश विरोधी कृत्यों की निन्दा व आलोचना के साथ उन्हें शख्त सन्देश देने की जरूरत थी जिस समय केन्द्र की ओर से कश्मीर में सभी पक्षों के लिए नियुक्त वार्ताकार दिनेश्वर शर्मा की राह आसान करनी चाहिए थी ऐसे समय में चिदम्बरम का बयान क्या देश हित में होगा? शायद वह वह केन्द्र सरकार की ओर से की जा रही कश्मीर नीति की राह मुश्किलें बढ़ाना चाह रहे हैं। क्योंकि उनका बयान आते ही जिस तरह नेशनल कांफ्रेंस ने तुरन्त बैठक बुलाकर स्वायत्तता सम्बन्धी प्रस्ताव पारित कर दिया कि कश्मीर को और अधिक स्वायत्तता मिलनी चाहिए इससे क्या समझना चाहिए यही कि सत्ता पक्ष को दरकिनार कर विपक्ष वहां अपना दल

- शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अतः अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - *विनय आर्य, महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

सच्चा अवलम्बन

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः।। -ऋ. 1/57/4
ऋषिः **सव्य आङ्गिरसः।।** देवताः **इन्द्र।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **प्रभूवसो** = हे महान ऐश्वर्यवाले! **पुरुष्टुत** = **हे बहुतों से स्तुति किये जाने वाले! ये** = **जो हम गिर्वणः** = हे वाणियों से पूजनीय इन्द्र! **गिरः** = हमारी वाणियों को, प्रार्थनाओं को **त्वदन्मः** = तेरे **त्वा** = **तेरा ही आरभ्य** = अवलम्बन करके **चरामसि** = चलते हैं **ते इमे वयम्** = वे ये हम **इन्द्र** = **हे इन्द्र! ते** = तेरे हैं सिवाय और कोई **न हि सघत्** = **नहीं प्राप्त करता, नहीं सुनता नः तद् वचः** = अतः हमारी इन प्रार्थनाओं को **क्षोणीः इव** = पृथिवी की भांति **प्रतिहर्य** = प्रतिकामना करो, आकर्षित करो।

विनय- हे महान् ऐश्वर्यवाले प्रभो! हमने तेरा अवलम्बन ग्रहण कर लिया है। हमने देखा कि सब ज्ञानी तेरी ही स्तुति करते हैं, अतः हमने भी अब अन्य सब सहारे छोड़कर एक तेरा ही सहारा ले-लिया है। हम इस जगत् में अपना एक-एक व्यापार, एक-एक काम-काज तेरे ही भरोसे करते हैं और कोई हमें क्या कहेगा, क्या समझेगा, हमें इस कार्य के करने से क्या दुःख आएंगे, संसार हमारी कितनी निन्दा करेगा यह हम कुछ नहीं देखते। बस, तेरी इच्छा(आज्ञा) क्या है इसे यथाशक्ति जानकर इसे ही तेरे भरोसे करते जाते हैं, अतः हे इन्द्र प्रभो! अब हम तेरे हैं। तू हमारा है और हम तेरे हैं। संसार में अब कोई और हमारा नहीं है। हमारे सब सम्बन्धी, हमरे घनिष्ठ-से-घनिष्ठ मित्र, हमारा धन, हमारी बुद्धि, शरीर आदि किसी का भी हमें सहारा नहीं है। इनका जितना सहारा है वह सब तेरे द्वारा ही है। इसलिए हे हमारे स्वामिन्! हे हमारे! हमारी प्रार्थनाएं तेरे सिवाय और किसके पास पहुंच सकती हैं? ऐसा संसार में और कौन है जिसके आगे हम विनती करेंगे? विनती करने की हीनता करेंगे? और किसी के आगे हम दीन नहीं बन सकते। इसलिए हे प्रार्थनाओं के सुनने वाले! हे वाणियों की पूजा ग्रहण करने वाले! हम जो प्रार्थनाएं तेरे चरणों में पहुंचा रहे हैं उन्हें तुम भी चाहो। तुम भी उन्हें अपनी ओर इस प्रकार खींचो जैसे यह विशाल भूमि अपनी आकर्षण-शक्ति से सब पार्थिव वस्तुओं को अपनी ओर खींचती रहती हैं। हम कोई वस्तु ऊपर या इधर-उधर किसी विरुद्ध दिशा में फेंके, तो भी वह वस्तु अन्त में खिंचकर पृथिवी के पास पहुंच जाती है। इसी प्रकार हे हमारे देव! हमारी प्रार्थनाओं में यदि कोई त्रुटि हो, इनमें आत्मसमर्पण की कमी होने के कारण ये प्रार्थनाएं ठीक तुम्हारी ओर जाने योग्य न हों, तो भी हे देव! इन्हें तुम अपनी ओर खींच लो। जब हम तुम्हारी कामना करते हैं तब तुम हमारी कामना न करो- यह कैसे हो सकता है? नहीं, तुम भी पृथिवी की भांति हमें खींच रहे हो। हम तो तुम्हारी ओर आ ही रहे हैं, अतः हमारी कामनाओं के पाने की तुम भी प्रतिकामना करो। हमारी प्रार्थनाओं को प्रतिग्रहण करो। तुम्हारे सिवाय अब हमारा और कोई नहीं रहा।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सुश्री मायावती के बयान पर विशेष : महात्मा बुद्ध बनाम राजनीति

...जानकार कह रहे हैं कि उनके भाषण से प्रतीत हो रहा था कि जैसे वह केन्द्र सरकार और उसके समर्थित हिन्दूवादी दलों को चेतावनी दे रही हों कि मैं दलितों की विशाल आबादी का धर्म बदलकर उन्हें बौद्ध बना दूंगी तो तुम हिन्दुत्व की राजनीति कैसे करोगे? हालाँकि आधुनिकता की दौड़ में जब बाजार की शक्तियां दुनिया पर प्रभावी हैं, लगता है कारपोरेट संस्कृति की चकाचौंध में दलित केवल एक राजनीतिक शब्दावली बन कर रह गया है। .....

महात्मा बुद्ध के नाम पर अपनी राजनितिक रोटी सेकने वालों को एक बार बुद्ध का जीवन अवश्य पढ़ लेना चाहिए उसने मोक्ष (निर्वाण) के लिए राजपाट छोड़ा था और यह लोग अपने राजपाट के निर्माण के लिए आज महात्मा बुद्ध का प्रयोग कर रहे हैं। पिछले दिनों आजमगढ़ में एक रैली को संबोधित करते हुए बसपा अध्यक्ष मायावती ने कहा अगर सत्ताधारी दलों ने दलितों, मुसलमानों और आदिवासियों के प्रति अपनी सोच नहीं बदली तो वे लाखों समर्थकों के साथ बौद्ध धर्म अपना लेगीं। लेकिन वोटों की राजनीति और धार्मिक ब्लैकमेलिंग में इस बात का जवाब कौन देगा कि अपने समर्थकों यानि दलितों, मुसलमानों और आदिवासियों में उनके साथ उनके कितने मुस्लिम समर्थक बौद्ध धर्म स्वीकार करेंगे?

जानकार कह रहे हैं कि उनके भाषण से प्रतीत हो रहा था कि जैसे वह केन्द्र सरकार और उसके समर्थित हिन्दूवादी दलों को चेतावनी दे रही हों कि मैं दलितों की विशाल आबादी का धर्म बदलकर उन्हें बौद्ध बना दूंगी तो तुम हिन्दुत्व की राजनीति कैसे करोगे? हालाँकि आधुनिकता की दौड़ में जब बाजार की शक्तियां दुनिया पर प्रभावी हैं, लगता है कारपोरेट संस्कृति की चकाचौंध में दलित केवल एक राजनीतिक शब्दावली बन कर रह गया है। किसी समय में आदिवासियों को साथ लेकर, पिछड़े कमजोर तबके को सामाजिक रूप से उभारने के लिए कांशीराम ने पार्टी का जो ढांचा खड़ा किया था, वह बिखरा ही नहीं वरन् समाप्त भी हो गया है। आज दलितों, पिछडों, और अल्पसंख्यक समुदायों को लेकर जो उसकी राजनीतिक जमीन थी, वह ध्वस्त हो चुकी है। कारण अधिकांश दलित समुदाय के लोग अपने नेताओं की हकीकत समझ चुके है और सबसे बड़ा सवाल भी यही है कि दलितों को बौद्ध बनाकर मायावती कोई राजनीतिक उद्देश्य हासिल करना चाहती हैं या दलितों का उत्थान? या फिर इसी तरह दलितों के नाम पर राजनीतिक रोटियां सिकती रहेंगी।

इस समय मायावती अपने राजनीतिक जीवन के सर्वाधिक संकट काल में हैं, लिहाजा वे वह सब कुछ करेंगी जो उसे सत्ता तक पहुंचा सकता है। शायद उनकी चिन्ता इस बात को लेकर भी कि सामाजिक रूप से दलितों को अलग रखने की जो खाई उसने खोदी थी फिलहाल वह खाई पटती नजर आ रही है। वह कह रही हैं कि उन्होंने संसद से इस्तीफा भी बाबा साहेब का अनुकरण करते हुए दिया था; जबकि मायावती के बारे में कहा जाता है कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के धर्म परिवर्तन के पचास साल पूरे हुए तो मायावती 14 अक्टूबर 2006 को नागपुर दीक्षाभूमि गई थीं जहां उन्हें पहले से किए गए वादे के मुताबिक बौद्ध धर्म अपना लेना था। यह वादा कांशीराम ने किया था कि बाबा साहेब के धर्म परिवर्तन की स्वर्ण जयंती के मौके पर वह खुद और उनकी उत्तराधिकारी मायावती बौद्ध धर्म अपना लेंगे उसी दौरान मायावती ने वहां बौद्ध धर्मगुरूओं से आशीर्वाद तो लिया लेकिन सभा में कहा, मैं बौद्ध धर्म तब अपनाऊंगी जब आप लोग मुझे प्रधानमंत्री बना देंगे। बौद्ध भिक्षु भी सोच में पड़ गए कि यह विशुद्ध धर्म के नाम पर राजनीति कर रही हैं।

जनवरी, 1956 में दिल्ली के एक साधारण परिवार में जन्मी मायावती 1984 में भारतीय राजनीति का चेहरा बनती हैं। गरीब, दलित, दबे, कुचले वर्ग की राजनीति करते-करते 1995 को देश के सबसे बड़े प्रान्त उत्तरप्रदेश की मुख्मंत्री और देखते-देखते करोड़ो अरबों रुपये की मालकिन बन जाती हैं। अब उनके सामने आय से अधिक सम्पत्ति रखने और उनके भाई आनंद कुमार की फर्जी कंपनियों में भारी निवेश का मामला भी खुला हुआ है। इस मामले में दलित चिंतक एस.आर. दारापुरी कहते हैं कि धर्म व्यक्तिगत मामला है। वह चाहे कोई धर्म अपना लें इसके लिए धमकी देने की क्या जरूरत है? फिर भी अगर मायावती बौद्ध हो ही जाएं तो सवाल ये भी है कि इससे भारतीय जनता पार्टी का नुकसान क्या होगा और धर्म बदल देने से मायावती का लाभ क्या होगा?

हालाँकि धर्म के बारे में सामान्य रूप से कहा जाता है कि यह जीवन जीने का रास्ता बताता है। लेकिन यदि वर्तमान हालात पर गौर करें तो यह सत्ता तक जाने का रास्ता भी तलाश करता है। हम न केवल धर्म को बल्कि साधारण सी समस्याओं का भी राजनीतिकरण करने से नहीं चूकते इस बारे में गहराई में नहीं जाना चाहता, पर मेरा मानना हैं कि धर्म के नाम पर गुमराह करना बन्द होना चाहिए। राजनेताओं को भूख, बेरोजगारी, कुपोषण भ्रष्टाचार आदि समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए यही एक राजा का वास्तविक धर्म और कर्त्तव्य है।

राजनेता जब धर्म को निज स्वार्थ के लिए उपयोग करें तो धर्म का इससे बड़ा दुर्भाग्य भला क्या होता होगा? लेकिन धर्म और राजनीति के घालमेल के कारण विचित्र परिस्थितियाँ निर्मित होती जा रही हैं। जिसमें जितने सवाल हैं उतने जवाब नहीं हैं हालांकि धर्म और राजनीति का घालमेल सदियों से होता आ रहा है किन्तु इसका वर्तमान स्वरूप काफी व्यथित करने वाला है। कला, संस्कृति से लेकर अब धर्म भी राजनीति के मंचों पर खड़ा नजर आ रहा है। यह स्थिति क्यों बनी और क्या ऐसी ही स्थिति हमेशा बनी बनी रहेगी? यह सवाल भी हम सबके सामने खड़ा है।

- सम्पादकीय

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

यज्ञ से दूर होते हैं संक्रामक रोग

- वन्द्येश्वर मुमुक्षु वानप्रस्थ

....आजकल तपेदिक, प्लेग, हैजा, मोतीझरा आदि अनेक रोग नगरों में नित्य फैले ही रहते हैं। किस-किस का टीका कौन-कौन ले? जबकि उनका प्रभाव भी अस्थायी होता है। उनमें से अनेकों टीके पुरुषत्व और जीवन शक्ति को भी हानि करते हैं। फिर क्या करें? .....उत्तर- सबसे उत्तम उपाय है कि प्रत्येक घर में नित्यप्रति हवन किया जाय, जिससे वायु शुद्ध और हल्की होकर स्वयं कृमियों का नाश कर दे। उस वायु से जहां खान-पान की वस्तुएं कृमि रहित होंगी, शीघ्र सड़ने से बचेंगी वहीं स्वस्थ पुरुष रोग से सुरक्षित रह सकेंगे। अस्वस्थ भी स्वस्थ हो जाएंगे। वे ही परमाणु वायु में सम्मिलित होकर श्वास द्वारा जब रोगी के शरीर में प्रवेश करेंगे तब वहां के कृमियों का नाश करेंगे।.....

संक्रामक रोग जैसे तपेदिक, हैजा, प्लेग, चेचक, मोतीझरादि ये सब संक्रामक रोग यानी छूत के रोग बड़े भयानक होते हैं। यह छूत क्या है कैसे लगती है, आधुनिक नवीन विज्ञान इससे बचने के क्या उपाय बतलाता है और होम द्वारा इन रोगों से कैसे रक्षा होती है, ये बातें संक्षेप में प्रस्तुत हैं- जब कोई रोग, किसी रोगी के सम्पर्क से दूसरे स्वस्थ मनुष्य को लग जाए, उसे हम छूत की (Contagious) बीमारी कहते हैं। भारत, अफ्रीका तथा अरब के कुछ प्रदेशों में कुछ लोगों का विचार है कि छूत के रोगी को कोई भूत-प्रेत (जो होता ही नहीं है) चिपटा रहता है जो उड़कर स्वस्थ जनों को भी लग जाता है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। छूत रोग का कारण छोटे-छोटे कृमि जो दिखाई नहीं देते क्योंकि बराबर-बराबर रखने पर 15000 कृमि एक इंच स्थान में आ जाएंगे। वजन में एक खसखस के दाने पर 20 अरब कीड़े चढ़ेंगे। (भिन्न-भिन्न रोग के कृमि विभिन्न आकृति और भार वाले होते हैं, अत: उपरोक्त विवरण सामान्यत: समझना चाहिए।)

कृमि द्वारा रोग का होना भारत वर्ष के विद्वान बहुत समय से जानते थे। चेचक आदि के रोगी के पास प्रत्येक व्यक्ति को न जाने देना, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अब भी मिलता है। वेदों में अनेक स्थानों पर इन कृमियों का वर्णन है। प्रमाण-**ओ३म् दृष्टमदृष्टमतृहमथो कुरूरुमतृहम्। अरुणण्डून्त्सर्वान् छलुमान् क्रिमीन् न वचसाजम्भयामसि।।** अथर्व 2/31/2 दिखाई देने और न देने और न देने वाले कृमियों को मैंने नष्ट कर दिया है।

यूरोप में भी बहुत समय से यह धारणा विद्यमान थी, परन्तु उस समय कृमियों की विद्यमानता को वे अनुमान से ही सिद्ध करते थे, प्रत्यक्ष नहीं देख सकते थे। Dr. Lenwan Locks के अन्वेषण के पश्चात् अब लगभग दो शताब्दियों में इस विद्या में विशेष उन्नति हुई है और पिछली शताब्दी में तो किन्हीं दो अन्वेषकों ने आश्चर्यजनक अन्वेषण करके और इस विषय पर बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखकर संसार को चकित कर दिया। जिससे अनेक भयंकर रोगों की चिकित्सा बड़ी सुगम हो गई और अब कृमि का होना केवल अनुमान से ही नहीं सिद्ध किया जाता, किन्तु यन्त्रों द्वारा आंखों से देखे जाते हैं।

ये कृमि पृथ्वी पर सर्वत्र हैं। नित्य अनेक कृमि नाक और मुंह द्वारा हमारे शरीर में प्रविष्ट होते हैं और हमारी त्वचा पर भी चिपटे रहते हैं। यदि झरोखे के छिद्र से सूर्य प्रकाश आवे तो आंख से हजारों परमाणु उस प्रकाश में दिखाई देंगे। इन्हीं परमाणुओं में लाखों, करोड़ों कृमि होते हैं। खुली वायु की अपेक्षा बन्द वायु में, विशेषतया जहां अधिक मनुष्य रहते हों और ऊपर की अपेक्षा नीचे की वायु में अधिक कृमि होते हैं। स्वच्छ वायु किन्हीं कृमियों की कट्टर शत्रु है। ये कृमि, पतझड़ से सर्वाधिक और सर्दी में सबसे कम होते हैं। शुद्ध निर्मल जल में न्यून और गन्दे जल में खूब होते हैं। बहते जल में कम और बन्द व ठहरे जल में अधिक होते है। गंगा के निर्मल जल में इसका अभाव है।

रक्षा के आधुनिक उपाय : इन कृमियों से उत्पन्न रोग या छूत की बीमारियों से बचने के उपाय आधुनिक विज्ञान ने बड़े अन्वेषण और गहरी खोज के बाद निम्न बताए हैं-1. घर में कोई व्यक्ति रोगी के पास न जाय। रोग का टीका लगवाए। उसके पात्र, वस्त्र व मकान आदि सब पृथक हों।

2. यदि नगर में कोई संक्रामक रोग फैला हो तो अन्य बहुत से प्रतिबन्धों के साथ ही समस्त नगर के लोग टीका लगवाएं। यदि देश भर में फैला हो तो सारा देश टीका लगवाए और कई रोग साथ-साथ फैले हों तो सबका अलग-अलग टीका लगवाएं।

विचारणीय - भारत जैसे निर्धन और धर्मपरायण देश में क्या यह सम्भव है कि पुत्र रोशय्या पर पड़ा हो और माता-पिता उसके समीप न जाएं, पति रोगी हो और पत्नी पृथक बैठी रहे, उसकी कोई भी वस्तु न छुए? रोगी के कार्य हेतु हमेशा नर्स हो या रोगी को चिकित्सालय में डालकर सब घर चले आएं?

टीका लगवाना भी सरल काम नहीं है। प्रथम तो जब ज्ञात होता है कि टीके के कार्य के लिए अनेक जीवित पशुओं का रक्त, उन्हें विभिन्न प्रकार की यातनाएं देकर मशीन द्वारा निकालकर काम में आता है, तब धार्मिक भारतीयों को वैसे ही घृणा हो जाती है। फिर आजकल तपेदिक, प्लेग, हैजा, मोतीझरा आदि अनेक रोग नगरों में नित्य फैले ही रहते हैं। किस-किस का टीका कौन-कौन ले? जबकि उनका प्रभाव भी अस्थायी होता है। उनमें से अनेकों टीके पुरुषत्व और जीवन शक्ति को भी हानि करते हैं। फिर क्या करें?

उत्तर- सबसे उत्तम उपाय है कि प्रत्येक घर में नित्यप्रति हवन किया जाय, जिससे वायु शुद्ध और हल्की होकर स्वयं कृमियों का नाश कर दे। उस वायु से जहां खान-पान की वस्तुएं कृमि रहित होंगी, शीघ्र सड़ने से बचेंगी वहीं स्वस्थ पुरुष रोग से सुरक्षित रह सकेंगे। अस्वस्थ भी स्वस्थ हो जाएंगे। वे ही परमाणु वायु में सम्मिलित होकर श्वास द्वारा जब रोगी के शरीर में प्रवेश करेंगे तब वहां के कृमियों का नाश करेंगे। शतपथ ब्राह्मण 1.1.4,14-18 में किरात और आकुली, अतिसार और विशेष सूजन के रोग आर्यो को दु:ख देते रहते थे। उनके नाश करने के लिए ऋषभ नामी औषधि से सफलता न हुई। आर्यो को क्लेश था। बहुत खोज के बाद उन रोगों का यज्ञ द्वारा नाश करने का उपाय सूझा और वे सफल भी हुए।

हवन से बढ़कर और कोई उपाय इस छूत से बचने का (कभी) नहीं हो सकता, अत: वैदिक धर्म में प्रात: सायं हवन करना धार्मिक कृत्य बतलाया है ताकि प्रत्येक मकान की वायु शुद्ध होकर रोग नष्ट कर दे। इतिहास भी इसकी पुष्टि करता है। जिस समय हवन की यह प्रथा थी, रोगों की ऐसी भरमार न थी। लोकसभा, विधानसभा, म्युनिसिपल बॉडी आदि के सदस्य एवं अधिकारी यदि इस ओर ध्यान दें और करोड़ों रुपया टीका आदि की औषधियों पर व्यय करने के स्थान पर नगरों में नित्य प्रति विधिपूर्वक हवन कराने का प्रयत्न करें तो रोगों का बढ़ता हुआ वेग रुक सकता है। देश का धन देश में ही रहेगा, विदेशियों

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

बोध कथा

फूल मैं चुनने आया था बाग़े हयात में

एक थे सज्जन जीवनराम। ये सेठ ज्योति स्वरूप के पड़ोस में रहते थे-एक झोंपड़े में। उन्हें पता लगा कि सेठ के बहुत-से उत्तम मकान हैं। उनके पास जाकर वे बोले-''अमुक मकान मुझे दे दीजिये, मैं वहां निर्धन बच्चों के लिए एक पाठशाला आरम्भ करूंगा। एक नि:शुल्क औषधालय बनाऊंगा और प्रतिदिन सत्संग होगा। वहां आध्यात्मिक कथाएं होंगी, यज्ञ होगा। जो भी किराया आप मांगेगे, मैं दे दूंगा।''

ज्योति स्वरूप बोले-''तुम तो बहुत अच्छे व्यक्ति हो। इतने श्रेष्ठ काम तुम मेरे मकान में करोगे तो मैं नि:शुल्क दूंगा। किराया नहीं लूंगा। तुम मकान को स्वच्छ रखो। ये उत्तम काम करो। मुझे किराये की आवश्यकता नहीं।''

जीवनराम पहुंचे उस मकान में। वहां रहने लगे। आरम्भ में उन्होंने मकान को स्वच्छ रखा, परन्तु कुछ ही दिन व्यतीत हुए थे कि जीवनराम के कुछ जुआरी मित्र आ गये। पहले ताश शुरू हुई, फिर जुआ खेला जाने लगा। प्रतिदिन जुआ होता, तो शराब भी उड़ने लगी। धीरे-धीरे वह मकान डाकुओं का अड्डा बन गया। हर प्रकार के पाप वहां होने लगे। किसी ने ज्योतिस्वरूप से शिकायत की-''सेठ जी! जो मकान आपने यज्ञ और सत्संग के लिए दिया था, वह तो डाकुओं का अड्डा बन गया है।''

ज्योतिस्वरूप बोले-''ऐसी बात है?''

शिकायत करने वाले ने कहा-''जी! मैं अपनी आंखों से देखकर आया हूं।''

ज्योति स्वरूप ने अपने मुनीम को बुलाया; कहा-''जीवनराम से कहो कि मकान खाली कर दे। हमने पाप के लिए वह मकान नहीं दिया था।''

छोटे मुनीम जीवनराम के पास पहुंचे। जीवनराम ने कुछ अनुनय-विनय की। कुछ मुनीम साहब का हाथ गर्म कर दिया। उन्होंने जाकर रिपोर्ट दे दी-''सब ठीक है। किसी ने अनुचित शिकायत कर दी थी।''

अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि सेठ के पास पुन: शिकायत पहुंची। अबके उन्होंने बड़े मुनीम को भेजा। जीवनराम ने बड़े मुनीम की अनुनय-विनय की। उसके पांव पड़ा। प्रतिज्ञा की कि वह अपना सुधार करेगा। बड़े मुनीम ने सारी रिपोर्ट दे दी। सेठ ज्योति स्वरूप बोले-''बात बड़ी है, परन्तु यदि वह सुधरना चाहता है, तो उसे कुछ समय देना चाहिए।''

कुछ समय दिया गया। परन्तु फिर शिकायत आई कि जीवनराम के लक्षण पहले से भी बुरे हुए जाते हैं। अबके सेठ ने अपने बेटे को भेजा। जीवनराम ने उसे भी धोखा देने का प्रयत्न किया, परन्तु वह धोखे में नहीं आया। वकील से नोटिस दिला दिया कि ''मकान खाली करो।'' जीवनराम ने नोटिस लिया ही नहीं। मुकद्दमा हुआ। वारण्ट जारी हुए। पुलिस पहुंसी तो जीवनराम ने उसको रिश्वत देने का प्रयत्न किया, परन्तु अब कोई भी चाल चली नहीं। रोया-चिल्लाया। अन्त में मकान छोड़ना पड़ा।

यह जीवनराम है आत्मा, ज्योति स्वरूप है ईश्वर, और मकान है शरीर। इस मकान का कोई किराया नहीं। इसीलिये मिला यह मकान। ज्ञान के द्वारा कर्म, कर्म के द्वारा उपासना और उपासना द्वारा प्रभु का दर्शन करो। उसके स्थान पर बना दिया इसको पापों का अड्डा। तब छोटा मुनीम आया-कोई छोटी बीमारी-छोटी दुर्घटना। बड़ा मुनीम है तनिक बड़ा रोग। सेठ का लड़का है अधिक भयानक रोग। नोटिस है-हृदय की दुर्बलता, अन्तड़ियों का कार्य न करना, आंखों में मोतियाबिंद उतरना, कानों से कम सुनाई देना। नवर्स ब्रेकडाउन मुकद्दमा है। अन्तिम रोग वारण्ट है। पुलिस है मृत्यु। वह आ जाये तो फिर औषधियों की रिश्वत् नहीं चलती। तब जीवन राम को यह मकान छोड़ना ही पड़ता है।

मैं फूल चुनने आया था बाग़े हयात[1] में।
दामन[2] को ख़ार-ज़ार[3] में उलझा के रह गया।।

1. बाग़े-हयात = जीवन-वाटिका; 2. दामन = पल्लू; 3. ज़ार = कांटे।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

मनुष्य के ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य

-प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया

...'उपस्थान' के पांच मन्त्रों एवं 'नमस्कार' मन्त्र में ईश्वर के कुछ प्रमुख गुणों का उल्लेख किया गया है। वे गुण मनुष्यों के लिए आचरणीय हैं, विशेषकर उन साधकों के लिए जो ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हैं, ईश्वर की समीपता और मोक्ष-प्राप्ति के इच्छुक हैं।...

मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। जन्म-जन्मान्तरों के संचित पुण्य-कर्मो के फल स्वरूप मनुष्य शरीर की प्राप्ति होती है। मनुष्य बहुत सौभाग्यशाली है कि उसे कर्मयोनि मिली है, जबकि अन्य सभी योनियां भोगयोनियां हैं। कर्मयोनि में होने के कारण मनुष्य शुभ कर्म करते हुए सौ वर्षो तक या उससे भी अधिक वर्षो तक जीने की इच्छा करे एवं ईश्वर के सानिंध्य तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करें। मोक्ष-प्राप्ति के लिए अत्यधिक प्रयत्न एवं साधना की आवयकता है। यह कार्य समय-सापेक्ष्य भी है, अत: 'सन्ध्या' के मन्त्रों में अदीन और स्वस्थ रहते हुए सौ या उससे भी अधिक वर्षो तक जीवित रहने की प्रार्थना की गयी है। साधना के लिए पर्याप्त समय, स्वस्थ शरीर एवं स्वतन्त्र वातावरण की आवश्यकता है। इसीलिए 'जीवेम शरद: शतम्' वाले मन्त्र में इन तीनों की प्रार्थना एवं कामना की गयी है और इसके लिए पुरुषार्थ तो मनुष्य को स्वयं ही करना है।

'वैदिक संध्या' में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य के जिन तीन कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है, उनमें से अन्तिम है कि मनुष्य का ईश्वर के प्रति क्या कर्त्तव्य है और उसकी पूर्ति कैसे हो सकती है? समझने की बात यह है कि जिस ईश्वर ने हमें मनुष्य का सुन्दर शरीर दिया है, ऐसा शरीर कि जिसका एक-एक अंग अमूल्य है और उन अंगों का निर्माण ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता, उस ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। जिस परम पिता परमेश्वर ने श्वास लेने के लिए हमें शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन दी है, प्रकाश करने वाले सूर्य-चन्द्रमा दिये हैं और इनके लिए हम से कोई शुल्क नहीं ले रहा है; जिस सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने हमें नदियों का स्वच्छ जल, पेड़-पौधों की हरियाली, वनस्पति जगत्, नाना प्रकार के फल एवं खाद्य सामग्री तथा जीवन की अन्यान्य सुख-सुविधाएं प्रदान की हैं, उस प्रभु के प्रति धन्यवाद न करना मनुष्य की कृतघ्नता होगी। जिस परमेश्वर ने हमें इतना कुछ दिया है, उसके प्रति हमारा भी कुछ कर्त्तव्य बनता है। ईश्वर का मनुष्य पर बहुत उपकार है, उसने मनुष्य को बहुत-कुछ दिया है, पर मनुष्य ने तो ईश्वर के प्रति ठीक-से कृतज्ञता भी व्यक्त नहीं की है। क्या यह उचित है? नहीं न। यहां यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि मनुष्य ईश्वर के सम्बन्ध में क्या करे? इस प्रश्न का समाधान वैदिक 'संध्या' के 'उपस्थान' मन्त्रों एवं 'नमस्कार' मन्त्र में किया गया है। उपस्थान या उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप होना, ईश्वर की निकटता प्राप्त करना। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करे तथा उसके गुणों को अपने भीतर धारण करे, तभी वह परम पिता परमात्मा की निकटता प्राप्त कर सकता है। समझने की बात यह भी है कि ईश्वर को हमारी कृतज्ञता की निकटता प्राप्त कर सकता है। समझने की बात यह भी है कि ईश्वर को हमारी कृतज्ञता की कोई आवश्यकता नहीं; हमारी स्तुति, प्रार्थनादि की कोई ज़रूरत नहीं, पर हमें इसकी अपने कल्याण के लिए आवश्यकता है, अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए जरूरत है।

मनुष्य के जीवन का अन्तिम लक्ष्य है मोक्ष की प्राप्ति, ईश्वर की निकटता प्राप्त करना और उसी का उपाय उपस्थान मन्त्रों में बताया गया है। मनुष्य अपूर्ण है और ईश्वर पूर्ण; मनुष्य ग़लतियों का पुतला है, वह जीवन में प्राय: ग़लतियां कर जाता है, किन्तु ईश्वर त्रुटि रहित है, वह कभी कोई ग़लती नहीं करता। मानव-जीवन का सर्वोत्तम आदर्श ईश्वर ही है; वह अनुकरणीय है, उसी के गुणों को हमें अपने जीवन में धारण करना है और जैसे-जैसे हम ईश्वरीय गुणों को अपने

जीवन में धारण करते जाते हैं, वैसे-वैसे हमें उसकी निकटता प्राप्त होती जाती है।यदि हम ईश्वर के कुछ गुणों को भी पूरी तरह से आत्मसात् कर लें, धारण कर लें तो हमारा जीवन धन्य और सार्थक हो जाए।

'उपस्थान' के पांच मन्त्रों एवं 'नमस्कार' मन्त्र में ईश्वर के कुछ प्रमुख गुणों का उल्लेख किया गया है। वे गुण मनुष्यों के लिए आचरणीय हैं, विशेषकर उन साधकों के लिए जो ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हैं, ईश्वर की समीपता और मोक्ष-प्राप्ति के इच्छुक हैं। 'उपस्थान' के पहले मन्त्र में यह प्रार्थना की गयी है कि हम उस ईश्वर को उत्तम गुणों से प्राप्त करें कि जो अविद्यान्धकार से रहित है, सुख स्वरूप है तथा चराचर जगत् को देख रहा है। समझने की बात यह है कि जिस प्रकार ईश्वर अविद्या के अन्धकार से रहित है, वैसे ही हम भी अज्ञानमुक्त होकर ज्ञानी बने, अविद्या को छोड़कर ब्रह्म विद्या में प्रवृत्त हों। ईश्वर सर्वोत्तम है, ज्योति-स्वरूप है, दिव्य गुणों से युक्त है, हम भी उसके दिव्य गुणों को धारण कर प्रकाशमान हों। सूर्य उसी की ज्योति से प्रकाशित है, अनालक्ष्यपूर्वक प्रतिदिन अपना प्रकाश विकीर्ण करता है, संसार को आलोकित करता है, अपनी तेजस्विता से, किरणों से वनस्पति-जगत् और पेड़-पौधों को फलने-फूलने, अनाजों के पकाने में सहायक बनता है। जड़-देवता होने के बावजूद 'सूर्य' में अनेक ईश्वरीय गुण हैं। सूर्य को देखकर हम दानी, प्रकाशमान, समय का पाबन्द, तेजस्वी, आलस्य रहित बनने की प्रेरणा ले सकते हैं और इन ईश्वरीय गुणों को धारण करने का सतत प्रयत्न कर सकते हैं। 'उपस्थान' के पहले मन्त्र के अनुसार परमेश्वर सुखस्वरूप है, 'स्व:' है; हम भी संसार के सभी प्राणियों को सुखी बनाएं और किसी को दु:ख न दें। दूसरों को सुख देने में ही हमारा सुख निहित है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कामयनी में भी इसी वेदानुकूल बात को कहा है-

औरों को हंसते देखो,
मनु हंसो और सुख बनाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
जग को सुखी बनाओ।।

यदि हम ब्रह्मानन्द को प्राप्त करना चाहते हैं, रसमग्न होना चाहते हैं (रसो वै स:। रस॒ँह्येवालब्ध्वी आनन्दी भवति।) तो जगत् के समस्त प्राणियों को समदृष्टि और नि:स्वार्थभाव से सुख पहुंचाने की चेष्टा करें।

'उपस्थान' के द्वितीय मन्त्र के अनुसार वह परमात्मा 'जातवेदस्' है, वेदों का प्रकाश है, उसी ने हमें वेदों का दिव्य ज्ञान दिया है और वेद की ऋचाएं उसी का भान कराती हैं। उस सर्वप्रकाश, सर्वशक्तिमान, सर्वपालक प्रभु को 'सूर्य' के अभिधान से पुकारते हुए यह बतलाया गया है कि वह चराचर जगत् की आत्मा है, सर्वव्यापक है और संसार के सभी पदार्थ झण्डों के समान सर्वत्र उसी की उपस्थिति का भान कराते हैं। यह मन्त्र हमें यह प्रेरणा देता है कि ईश्वर के समान हम भी परम ज्ञानी बने, वेद-ज्ञान को प्राप्त कर अपने आचरण को वेदानुकूल बनायें और सदैव धर्म-मार्ग पर चलें। संसार का प्रत्येक पदार्थ चिल्ला-चिल्ला कर उसकी सत्ता का भान करा रहा है। हम उस सर्वव्यापक प्रभु को सर्वत्र देखें, जगत् के कण-कण में उसी का साक्षात्कार करें और उसे एक क्षण के लिए भी न बिसरायें।

वह परमेश्वर 'चक्षु' है-द्रष्टा है, सभी का मार्ग दर्शक है। इस चित्र-विचित्र संसार में तो सर्वत्र वह विद्यमान है ही, हृदय में भी है। वह विद्वानां अथवा उपासकों का बल है तथा सूर्य या हितकारियों, जल या श्रेष्ठ पुरुषों, अग्नि या ज्ञानियों का मार्ग दर्शक है। द्युलोक, पृथिवी एवं अन्तरिक्ष लोक में उसी की व्याप्ति है तथा वही चराचर जगत् की आत्मा है, जड़ जंगम उसी से प्रकाशित हैं। हमारा हृदय भी सदैव उसी से प्रकाशित रहे-हम एक क्षण के लिए भी उस प्रभु को न भूलें। समझने की बात यह है कि जैसे वह परमेष्वर सभी का मार्गदर्शक है, वैसे ही हम भी भूले-भटकों के पथ-प्रदर्शक बने, सद्धर्म के प्रचारक बने। साथ ही ईश्वर का सर्वव्यापक जान पाप-कर्मो से बचें। इस चित्र-विचित्र संसार के प्रत्येक पदार्थ को दिव्य दृष्टि से देखें और उसमें उस अदृश्य, दिव्य प्रभु के दर्शन करें, उस रचयिता की अद्भुत कारीगरी की अनुभूति करें।

हम उस परमात्मा को सौ वर्ष या उससे भी अधिक समय तक देखें जो सबका द्रष्टा है, जो देवों (विद्वानों) का परम हितकारी है, परम पवित्र या पूर्ण बलशाली है और जो सृष्टि के पूर्व भी विद्यमान था। उस प्रभु की कृपा से हम सौ वर्ष तक जीवित रहें, सौ वर्षो तक सुनते रहें, सौ वर्षो तक बोलते रहें तथा सौ वर्षो तक किसी के अधीन या दीन न हों। प्रभु कृपा से यह सब सौ वर्षो से भी अधिक समय तक हो। मानव शरीर की सार्थकता प्रभु भजन में है। अत: कानों की सार्थकता प्रभु का गुण-गान सुनने या श्रुति-श्रवण में है, वाणी की सार्थकता प्रभु का गुण-गान करने में है-वेद शास्त्रों के पठन-पाठन में है, आंखों की सार्थकता कण-कण में व्याप्त उस अदृश्य प्रभु की दिव्यता के दर्शन में है। साधना-पथ पर अग्रसर होने के लिए, योग-साधना और समाधि की अवस्था तक पहुंचने के लिए एवं अभीष्ट की सिद्धि के लिए चार चीजें परमावश्यक हैं- 1. स्वस्थ-बलिष्ठ शरीर लम्बी आयु (सौ शरद या उससे भी अधिक), अदीन-अनाश्रित् स्वतन्त्र जीवन की कामना की गयी है। सद्बुद्धि की कामना तो गायत्री/गुरुमन्त्र के द्वारा वैदिक सन्ध्या में तीन स्थानों पर की गयी है, क्योंकि बुद्धि मानव योनि की एक प्रमुख विशेषता तो है ही, जीवन के लिए सर्वाधिक महत्त्व पूर्ण भी है। ध्यातव्य यह भी है कि 'उपस्थान' के इस मन्त्र में अन्य ऋतुओं के बजाए 'शरद्ऋतु' का बारम्बर उल्लेख हुआ है। प्रभु से सौ शरद् ऋतुओं या उससे भी अधिक शरद् ऋतुओं तक जीवनदान देने की कामना की गयी है। मुझे इसका कारण यह लगता है कि शरद् ऋतु में मृत्यु-दर बढ़ जाती है, विशेषकर वृद्धों की। यदि शरद्ऋतु निकल जाए तो जीवन की आाशा बढ़ जाती है। यदि इस पर अनुसंधान हो कि किस ऋतु में मृत्यु-दर सर्वाधिक होती है, तो मेरे अनुमान की सत्यता को

- शेष पृष्ठ 8 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2017 मांडले : म्यांमा के आर्यजनों की प्रतिक्रियाएं

अक्टूबर का प्रथम सप्ताह मेरे जीवन का एक बहुत सुन्दर सप्ताह कहा जा सकता है। हृदय से बाहर जीवन जीने के लिए ज्ञानियों, विद्वानों, संतो के बीच बर्मा में गुजरे दिन हम सबके लिए हमेशा याद रहेंगे। साथ ही ये पत्र भी जीवन भर मन को हर्षित करते रहेंगे जो बर्मा (म्यामांर) के लोगों ने बर्मा में आर्यसमाज स्थापना के 120 वर्षों बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन पर सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली को लिखे।

1. म्यांमा की भूमि पर सर्वप्रथम 50 कुण्डीय का तथा 100 कुण्डीय महायज्ञ का सम्पन्न किया जाना अत्यन्त सुखद एवं आनन्दपूर्ण विषय है। 2. ऐसे भव्य आयोजन को बहुत कम समय में इतनी सफलता पूर्वक आयोजित कर लेना भी अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण बात है इसके लिये तो पांच दिन भी शायद कम लगता है। 3. सुबह-सुबह स्वामी देवव्रत जी का योगाभ्यास का कार्यक्रम भी बहुत ही अच्छा होता रहा जो जीवन में प्रतिदिन करना अति आवश्यक लगा। 4. इस सम्मेलन की सब गतिविधियों, सम्बोधन, भविष्य की योजना, इतने लोगों की हृदय से शुभकामनायें, शुभाशीर्वाद, नि:स्वार्थदान देना आदि देखकर दिल कहता है कि म्यांमा में आर्य समाज की स्थिति निश्चित ही आगे की तरफ जायेगी, बहुत कुछ बदलने वाला है। नव जागृति का पर्दापण हो चुका है। आर्य समाज का सूर्य उदय हो चुका है।

-धर्मराज आर्य, मंत्री आर्यसमाज च्वेब्बे

★★★

◦ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनधि सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सूचना मिली किन्तु अनेक कारणों से इममें भाग लेने की इच्छा नहीं थी, क्योंकि पिछले महीनों में ही यू.एस.ए., कनाडा देशों की लम्बी प्रचार यात्रा की थी, किन्तु सभा के मान्य अधिकारियों के विशेष आग्रह करने तथा एक सज्जन के द्वारा टिकिट बना लेने पर कार्यक्रम बन ही गया। मांडले नगर पास में होने पर भी इस बार एयर लाईन के कारण यात्रा में ही 3 दिन लग गये। क्वालालमपुर, रंगून, माण्डले-ब्रह्मदेश की धरती पर वैदिक धर्म के प्रचारार्थ 120 वर्ष पूर्व बनी आर्य समाजों तथा आर्यजनों, आर्य परिवारों को देख, सुन, जानकर मन में आशातीत प्रसन्नता हुई।

◦ बर्मा में पिछले 40 वर्षों तक तो सेना का शासन रहा हैं 100 वर्ष पूर्व भारतवर्ष के महान् तपस्वी, साहसी, पुरुषार्थी, जुझारू आर्य प्रचारकों ने, अंग्रेजों के आधीन देश में, अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में, अनेक प्रकार के अभाव-कष्टों को झेलकर, सुदूर जंगलों में कैसे वेद धर्म का प्रचार किया होगा, यह सोचकर तो हृदय सिहर जाता है। उनमें एक दीवानगी थी, उन्होंने तो शत्रु के साथ युद्ध करने वाले, साहसी सैनिक के समान, अपमान-कष्ट-अन्याय -अत्याचार -मृत्यु तक की परवाह किये बिना, इस देश में वेद धर्म की दुंदुभि बजायी थी, ये सब बातें पढ़-सुन-जानकर उनके प्रति अतीव श्रद्धा भाव हृदय में उमड़ जाता है और आंखों में प्रेम के आसूं निकल आते हैं। आज हम, अपनी तुलना उनसे करते हैं तो सिर झुक जाता है, अभिमान नष्ट हो जाता है।

◦ यज्ञ वेदी पर बैठे हुए मैंने जब, एक-एक हवन कुण्ड पर 20-20, 30-30 की संख्या में सुन्दर-स्वच्छ वस्त्रों तथा स्वर्णाभूषणों से सुशोभित माताओं-बहिनों तथा युवाओं को स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण तथा बृहद यज्ञ के मंत्रों का शुद्ध स्पष्ट उच्चारण सुना तो हृदय हर्षातिरेक से भाव विभोर हो गया। भारत तथा अन्य देशों से आये अभ्यागतों का स्वागत, सत्कार, भोजन सेवा, अभिवादन, भेंट प्रदान आदि व्यवहारों को देखकर अन्त:करण पुलकित हो गया। ब्रह्मदेश के आर्यों ने तो हम भारतीयों के लिए आंखें बिछा दीं उनके लिए जीवन में प्रथम ही ऐसा सम्मेलन था किन्तु मैंने भी ऐसा अद्‌भुत, आह्लादकारी, प्रेरक, अनुकरणीय सम्मेलन प्रथमवार ही देखा था, यह मेरी 28वीं प्रचार यात्रा है।

◦ वस्तुत: इस महासम्मेलन को सफल बनाने में न केवल सभा के युवा कर्मठ पदाधिकारियों ने अथक पुरुषार्थ किया अपितु म्यांमार बर्मा के स्थानीय आर्य समाजों के, श्रद्धन्वित, तपस्वी, त्यागी आर्य सज्जनों ने भी तन-मन-धन से स्तुतय परिश्रम किया। उनकी 40-50 वर्षों की मन में छिपी हुई कल्पनाएं-स्वप्न आज पूरे हुए। विदाई के समय तो ब्रह्मदेश के आर्यजनों विशेषकर माताओं तथा बहनों के नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी, वे सभी भाव-विभोर हो रहे थे।

-ज्ञानेश्वरार्य (म्यांमार: 12 अक्तूबर, 17)

★★★

वैदिक धर्म ही सत्य धर्म है। अन्यत्र सत्य की खोज निरर्थक है। इसलिये वैदिक धर्म को ही अपनाना, जानना चाहिए।

-गिरधारी लाल, आ. स., कलौ, बर्मा

★★★

आप लोगों के सौजन्य से हमारे म्यांमार देश के माण्डले शहर स्थित माता श्री अम्बिका मन्दिर के प्रांगण में दिनांक 6, 7 और 8 अक्टूबर 2017 तक नित्य प्रतिदिन आर्य महासभा के कार्यक्रमों का विभिन्न रूपों से संचालित कर बड़े ही सजधज के साथ किया गया जिसमें योगाभ्यास, हवन यज्ञ तथा विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों द्वारा आर्य समाज के कार्यक्रमों का विभिन्न रूपों से संचालित किया गया, विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों द्वारा आर्य समाज के कार्यक्रमों को प्रभावशाली विचारधाराओं पर मंथन किया गया जोकि सराहनीय था।

यह कार्यक्रम हमारे म्यांमार देश में कभी हो भी सकेगा इसकी हम लोग आशा भी नहीं किये थे परन्तु इस कार्य को आप सबके सहयोग यानि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अथक प्रयास तथा सहयोग के साथ ही सफलता पूर्वक हो सका है। इसके लिए हम म्यांमा देश के आर्य बन्धुओं की तरफ से कोटिश: आभार प्रकट करते करते हैं।

- रामनजर आर्य, म्यांमार

★★★

आपके आगमन से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन से हम या पूरे म्यांमा को कितना लाभ हुआ है यह शब्दों में बताना हमारे लिये मुश्किल है, मैं बहुत ही खुश हूं आने वाले 2018 के सम्मेलन में मैं आर्य स्त्री समाज के साथ आने की इच्छा अभी से हो गई है।

- श्रीमती दीया दास,
आर्य स्त्री समाज जियावाडी

★★★

आप सभी विभिन्न देशों के आर्यजन हमारे म्यांमा में सम्मेलन का आयोजन करने पधारे और अपनी-अपनी वाणी से अमृत रस बरसा कर यहां के वासियों को सत्य मार्ग दिखाये। ये बड़े ही गौरव की बात है। हम म्यांमा के वासी इससे पूर्व अपने को असहाय समझते थे, परन्तु आप सभी के इस आयोजन ने हमको प्रबल बना दिये। मैं आप सभी के लिए प्रभु से विनती करता हूं आप सभी को आगे भी ऐसे कार्य करने कराने की शक्ति दे। इस सम्मेलन हेतु एक कविता का कुछ पद लिखाता हूं-

राजेन्द्र की है प्रभु से विनती,
सम्मेलन शुभकारी हो,
विद्या वेद की उन्नति होवे,
विद्यालय गुण कारी हो।
सुख शान्ति बढ़जावे जगमे,
घर-घर मंगलाचारी हो,
सत्य भावना न्याय बढ़े अरु,
सभी ज्ञान अधिकारी हों।

- राजेन्द्र चौधरी, जियावड़ी, म्यांमा

★★★

आर्य महासम्मेलन बहुत सुचारु रूप से पूरा हुआ। खाने-पीने की व्यवस्था सराहनीय रही। लगता है अभी तक म्यांमा में ऐसा सुविधाजनक सम्मेलन नहीं हुआ है। धर्म की व्याख्या अद्वितीय, सराहनीय है।

-राम लाल, आर्य समाज च्वेब्बे

★★★

म्यांमा देश के माण्डले शहर में 6,7,8 अक्टूबर 2017 को आर्य विश्वसम्मेलन का बहुत ही महत्वाकांक्षा के साथ विशाल आयोजन हुआ।

म्यांमा में ऐसा विश्व सम्मेलन हो सकता है इसका विचार सपने में भी नहीं देखा था, न सोचा था। परन्तु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा म्यांमा आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में जो कार्यक्रम हुआ है उसका व्याख्यान मैं लिखित में नहीं दे सकता हूं क्योंकि ऐसा बड़ा सम्मेलन इस म्यांमा में कभी नहीं हुआ है। सुबह से रात्रि 9.30 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम में योगाभ्यास, हवन-यज्ञ, विदवत्ता तथा म्यांमा से आए हुए लोगों द्वारा धार्मिक, सामाजिक प्रवचन के साथ भजन, कविता आदि का समावेश बहुत ही विशाल था।

म्यांमा देश के माण्डले नगर के आर्य समाज का निर्माण के 120 वर्ष बाद ऐसा विशाल आयोजन हुआ है जो बहुत ही अच्छा तथा मान-सम्मान और गौरव महसूस होता है। हम चाहते हैं कि पुन: एक बार म्यांमा में ही ऐसा महासम्मेलन आयोजित हो।

-हरिशंकर चौधरी,
भू.पू. अध्यक्ष आर्य समाज जियावड़ी

★★★

यह बहुत सौभाग्य की बात है कि है हमारे यहाँ म्यांमा देश में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन शांतिपूर्ण वातावरण के साथ संपन्न हुआ। जिसमें अनेक देशों से आये वैदिक विद्वानों, संन्यासियों के दर्शन हुए, उनकी अम्रत वाणी सुनने का अवसर प्राप्त हुआ।

सामूहिक हवन यज्ञ देखने को मिला। हवन यज्ञ करने की ठीक-ठाक विधि-विधान की जानकारी हमें प्राप्त हुई। हवन से होने वाले लाभ, अग्नि वायु, जल, आकाश, पृथ्वी आदि को हवन यज्ञ की बहुत आवश्यकता है इन सभी बातों का भी हमें ज्ञान प्राप्त हुआ।

आसन प्राणायाम की क्रियाएं भी हमें सीखने को मिली उससे होने वाले लाभ की जानकारी के साथ विद्वानों के प्रवचन वैदिक धर्म की महानता का भी विशेष बोध हुआ हम चाहते हैं इसी प्रकार का महासम्मेलन हर साल हमारे यहाँ होता रहे और सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हमें होवें जिससे हमारा मनुष्य जीवन सफल हो।

-ओमप्रकाश वर्मा, प्रधान, आर्यसमाज, चौगाई बस्ती, जियावाडी

★★★

मांडले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ने मुझको आत्मविश्वास दिया सम्मेलन में आने के बाद मुझे बढ़ने की शक्ति मिली। जब दिल्ली में आर्य महासम्मेलन हुआ तो वहां की सी.डी. देखकर ही मुझे अत्यंत खुशी मिली थी उसी समय से मैं अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की प्रतीक्षा रही।

पिछले साल नेपाल में हुआ तो मेरे मन में वहां जाने की लालसा जागृत हुई थी किन्तु उस समय धन के आभाव के कारण मैं नहीं पहुँच पाई। इस बार मांडले का नाम सुनकर मुझसे रहा नहीं गया। यहाँ आने के बाद मुझे भारत की ज्ञान विभूतियों के वक्तत्व सुनकर मुझे भारत आकर शिक्षा प्राप्त करने की जाग्रति मिली।

आपके द्वारा कराए गये संकल्प हवन, यज्ञ और वैदिक धर्म की शिक्षा आदि का प्रचार-प्रसार म्यांमा के बच्चों को विद्वान बनायेंगे। स्वयं सीखेंगे दूसरों को सिखायेंगे वेद पढ़ेंगे उसका प्रचार करेंगे। आपके द्वारा सिखाई गयी विद्या को व्यर्थ नहीं जाने देंगे यह मेरा अचल संकल्प है।

- सुश्री लाजवंती वर्मा, च्वेब्बे बर्मा

★★★

आपके अथक प्रयास से म्यांमार के मांडले नगर में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होना इस पुनीत कार्य के साथ-साथ इस देशमें शताब्दियों तक अति श्रद्धा से स्मरण किया जायेगा। यहाँ एक से अधिक हवनकुंड में प्रथम बार अग्नि प्रज्वलित दिखाई दी। इसे देखकर हमें यह अहसास हुआ कि जैसे पूनम की रात में दीपावली की दीप मलिका हो रही है। इस हवन के साथ-साथ यहाँ एक और भी यज्ञ हुआ जिसे मैं ज्ञान यज्ञ की संज्ञा प्रदान कर रहा हूँ इस यज्ञ में भारत तथा विश्व के विभिन्न देशों से आये विद्वान जन तथा विदुषी माताओं ने वेद, उपनिषद, दर्शन आदि के पवित्र ज्ञान की आहुति क्रमबद्ध प्रदान करते रहे जिससे हमारा तथा म्यांमा के प्रवासी हिन्दुओं की आत्मा शुद्ध हो गयी। अत: आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आगामी कुछ वर्षों के बाद म्यांमा देश में पुन: आर्य महासम्मेलन करने का सुअवसर प्रदान करेंगे।

-विजय श्रीवास्तव (प्रचार मंत्री)
आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा

Veda Prarthana - 19

Omniscient God Knows and Judges All Our Deeds, Even Those Done in Secret

- **Acharya Gyaneshwarya**

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्। द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः।।

Yastishthati charati yash-
cha vanchati yo nilayam
charati yah pratankam. Dvou
samnishadyam yat mantayete
raja tadveda varun trittyah.

(Atharva Veda 4:16:2)

Varun Omniscient God, Most High and Noble, raja King of all kings tadveda knows all what goes on in the world tritiyah as an unseen third person and a witness to all the events, yah tishthhati whether a person is standing still charati or moving yah cha vanchati or one is deceiving others, yo nilayam charati or one is doing bad deeds in secret, i.e. hiding behind deceptive cover, yah pratankam or one is acting violent and/or terrorizing others, dvou samnishadyam or whenever two persons are sitting together yat mantayete and discussing or planning something in secret.

Most persons, who lie, do sinful or evil deeds, usually do so when in their mind the have decided that nobody is watching or listening to them and/or that others will not find out. Most thieves and rrbbers steal from others under the cover of darkness when they feel nobody is watching them or recognize them so that they are unlikely to get caught. It is seldom that a thief tries to steal from others in broad daylight when others are watching and they are more likely to be caught. Similarly, most persons who lie or perform sinful deeds are primarily afraid of being caught and getting punished rather than actually lying or performing the sinful deed. However, the fundamental mistake of such persons is that even if they could escape being caught by others either lying or performing sinful deeds, they will not escape from Omnipresent All Knowing God who watches and knows all our deeds as well as even knows what goes on in our minds. We may think that we are smart, bright and clever, and may even succeed in keeping secret our lies, bad deeds or deception from our parents, brothers, sisters, relatives, friends, superiors at work, police or other authorites in power, but as stated above nothing is hidden from God. God knows everything that goes on in our life, our thoughts, words and actions.

The primary definition of atheism is that a person (even though he/she may claim a belief in God or religion) while doing a bad deed or after completing a bad deed has a false belief that because nobody has seen me perform the evil deed or knows that I have done it, I am safe from getting a punishment for doing the bad deed. Once a person starts believing that God does not exist or does not give appropriate punishments for bad deeds, he/she deception, back stabbing intimidating others, or even using violence. He/she schemes to 'succeed' at all costs even if it means putting down or insulting honest persons, and in extreme cases killing or eliminating true or perceived opponents. He/she sometimes schemes alone while at other times joins like minded persons in his/her plans. All such behaviors only happen when one does bot believe in God or only pretends to have a belief in God but truly does not have faith in God, and one uses the excuse that to succeed in life I am doing what others around me are also doing.

Above mentioned apparently clever but in truth ignorant persons forget that even when one is scheming alone in a secret place, God who is Omnipresent is a witness to all our karmas be they in thoughts, words or deeds. God is the final Judge of our actions and will punish us for our misdeeds. God knows all the details of our actions. Nobody can do any deed without being observed by the Ultimate Seer, God. We forgetful human beings ofteh forget what karmas we did even a few hours earlier, but God knows all our karmas we have performed every moment, every hour and everyday of our lives. Therefore, at no time or place we should ever believe that we are alone and not being oberved. Instead, we should always believe that God and I are always together. Whenever, two persons are talking and communicating with each othey they should alwaysr emembr that God is present there as a third person and is a witness to all of their words and actions.Thus, we should always remember at all moments in our lives, that Omniscient God is the Ultimate Judge and He is both guiding and judging us.

Dear brothers, sisters and friends, all of you who are true believers in God, if you want to escape suffering and misery in life, you must have a deep abiding faith in God's Omnipresence including that He is present inside your soul and is watching all your deeds and will judge them and mete out appropriate reward or punishment. Therefore, as described in the Vedas and related Vedic scriptures we must always follow truth, dharma and perform only virtuous deeds in life. We must stay away from sinful and evil deeds at all times. It is God's eternal law that a soul must bear the consequences of its actions. Good actions bring good rewards in form of happiness, wisdom, prosperity, peace, contentment and joy. And bad deeds bring unhappiness or misery in the immediate or distant future. God is always watching and judging our deeds whether we do our deeds under the cover of darkness or in the secret. This is an immutable rule.

(For God's attributes, also see mantras # 1, 2, 5, 8, 10, 28, 30, 31 and To get rid of your vices and bad conduct in life: also see mantra # 14, 15, 16, 18, 22, 23)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ – 31
दैनिक व्यवहारस्य वस्तूनां नामानि

गतांक से आगे....

Anxiety	चिन्ता
Apple	आतृप्यम्
Actor	नटः
Actress	नटी
Adventure	साहसिकचेष्टितम्
Age	वयः
Astrologer	गनकः
Bag	पुटः
Ball	कन्दुकः
Bracelet	कङ्कणम्
Cake	पिष्टकम्
Captain	नायकः
Cockroach	तैलपायिका
Clock	घटिकायन्त्रम्
Fat	मांससारः
Finger	करशाखा
Forehead	कपालः
Gun	नालिकास्त्रम्
Hat	शिरस्त्राणम्
Hospital	आरोग्यशाला
Hour	घटिका

Idea	बोधः
Kettle	कटाहः
Kitchen	महानसः
Mian Gate	पुरद्वारम्
Market	आपणः
Medicine	औषधम्
Net	जालम्
Nurse	धात्री
Parlour	संलापकोष्ठम्
Pocket	कोषः
Powder	रेणुः
Sandal	काष्ठपादुका
Screen	यवनिका
Shirt	कञ्चुकः
Signature	नामनिवेशनम्
Extraordinary	अनन्यसदृशः
Mobile phone	भ्रमनध्वनिः
Cellphone	जङ्गमं दूरवाणी
Charger	वारकीरः

Charger which the sacrifical knife is laid	खड्गपात्रम्
Battery	विद्युत्पेटिका
Touch screen	स्पर्शवेदीपटल
Message	सन्देशः
Message Box	सूचनामञ्जूषा
Private Message	व्यैक्तिक सन्देशः
Video	अङ्गकीयश्यलेख
Video conference	श्यपरिषद्
Email	वैदुतिकसन्देश
Google	गूगुल
Music	संगीतम्
Game	चित्रक्रीड़ा
Camera	चित्रग्राहिणी
Digital camera	अङ्कीयचित्रक

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

क्या उन्हें दुर्गन्ध नहीं आती थी?

रोहतक में एक मुहल्ले में दलितवर्ग के भाई रहते हैं। वहाँ एक चमड़े वाला कारखाना है। चमड़े के कारखाने के कारण वहाँ बहुत दुर्गन्ध आती है। किसी के लिए वहाँ कुछ समय के लिए रुकना बड़ा कष्टप्रद ही होता है। दुर्गन्ध सबका जीना दूभर कर देती है।

इसी चमड़ेवाले कारखाने के क्षेत्र में दलितों के बच्चों की शिक्षा के लिए श्री परमानन्दजी विद्यार्थी ने एक पाठशाला खोल दी। उन्हें दिन-रात दलितोद्धार का ध्यान रहता था। दीन बालक-बालिकाओं को शिक्षित बनाकर उन्हें जो आनन्द मिलता था, उसका वर्णन न वाणी कर सकती है और न ही लेखनी उनके उस आनन्द का शब्द-चित्र खींच सकती है।

एक बार हिसार के स्वामी अग्निदेवजी भीष्म को विद्यार्थीजी वह पाठशाला दिखाने ले-गये। भीष्मजी ने इन पंक्तियों के लेखक को बताया कि उनके लिए तो वहाँ खड़ा होना ही कठिन था। न जाने विद्यार्थीजी कैसे तपस्वी हैं, जो घण्टों उस दुर्गन्ध में बिताते हैं। कई वर्ष तक विद्यार्थीजी वहाँ यह सेवा-यज्ञ चलाते रहे। उनकी सेवा-साधना से आज उनके उन दलित शिष्यों में से कई बड़े-बड़े उच्च अधिकारी हैं और उनपर आर्य समाज की छाप है। वे विद्यार्थीजी का यशोगान करते नहीं थकते। ऋषि की पवित्र शिक्षा से दुर्गन्धियुक्त वातावरण को सुगन्धित करके उन्होंने नरक को स्वर्ग बना डाला। वे आर्यसमाज की नींव का एक पत्थर थे।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

17वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सैक्टर 3,4,5,6 एवं विजय विहार रोहिणी का 17वां वार्षिकोत्सव 17 से 19 नवम्बर 2017 के बीच पार्क सं. 2 पाकेट ए-2, सैक्टर-5 रोहिणी (निकट विश्राम चौक) में आयोजित किया जायेगा। इस अवसर पर यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित होगा। प्रवचन आचार्य भद्रकाम वर्णी जी एवं भजन आचार्य विजय भूषण जी प्रस्तुत करेंगे। *-सुरेन्द्र चौधरी, मंत्री*

आर्य समाज गोविन्दपुरम गाजियाबाद का

17वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोविन्दपुरम गाजियाबाद अपना 17वां वार्षिकोत्सव 3 से 5 नवम्बर 2017 के बीच आयोजित कर रहा है। जिसमें डॉ. जयेन्द्र आचार्य (आर्ष गुरुकुल नोएडा) मुख्य वक्ता एवं यज्ञ ब्रह्मा होंगे व आचार्य शंकर मित्र वेदालंकार जी भजन प्रस्तुत करेंगे। *- सतीश कुमार साहरन*

आर्य समाज सागरपुर का

38वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सागरपुर अपना 38 वां वार्षिकोत्सव 17 से 19 नवम्बर 2017 के बीच आयोजित कर रहा है।15 व 16 नवम्बर को प्रात: 5:30 बजे से 6:30 बजे तक प्रभातफेरी का आयोजन किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य श्री कुंवर पाल शास्त्री जी होंगे व भजन पं. मधुर शास्त्री जी प्रस्तुत करेंगे। स्वामी अमृता नन्द जी धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष, वर्ण व्यवस्था ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, आश्रम व्यवस्था ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास विषयों पर प्रवचन करेंगे। पूर्ण आहूति एवं आर्य वीरों का प्रदर्शन 19 नवम्बर प्रात: 10 बजे होगा। *-बच्चन सिंह आर्य, मंत्री*

28वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मुम्बई (मुलुण्ड शाखा) का 28वां वार्षिकोत्सव 2 से 5 नवम्बर 2017 के बीच आयोजित किया जाएगा। जिसके अन्तर्गत सामवेद पारायण महायज्ञ, महिला सम्मेलन, भक्ति संगीत का आयोजन किया जाएगा।

-विजय कुमार गौतम, मंत्री

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग का

28वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली का 28वां वार्षिकोत्सव समारोह 16 से 19 नवम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर सामवेदीय यज्ञ, एवं वेद कथा आचार्य डॉ. वागीश जी तथा भजन श्री लक्ष्मी कान्त जी के होगे। यज्ञ पूर्णाहुति एवं आर्य सम्मेलन का आयोजन 19 नवम्बर को प्रात: 7:30 से 1:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा।

-रवि चड्ढा, मन्त्री

आरोग्य मन्दिर का उद्घाटन

आर्ष योग संस्थान बड़ौली नीमका रोड. सै.-76 फरीदाबाद का 12वां वार्षिकोत्सव महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में 16 से 19 नवम्बर के बीच आयोजित किया जाएगा। समारोह के अन्तर्गत महाशय जी के करकमलों द्वारा आरोग्य मन्दिर का उद्घाटन किया जाएगा व सामवेद पारायण यज्ञ एसवं वेदपाठ गुरुकुल मंझावली के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा, आर्य वीरदल एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारी अपना व्यायाम प्रदर्शन करेंगे। *-ओम प्रकाश शास्त्री, कार्यालय मंत्री*

वैदिक विद्वानों की आवश्यकता

दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के लिए गुरुकुलीय शिक्षा से परिपूर्ण वैदिक विद्वानों की आवश्यकता है। जो वैदिक विद्वान अपनी सेवाएं दिल्ली के आर्य समाजों को देने के इच्छुक हों वह अपना जीवनवृत्त 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा -15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' में अथवा aryasabha@yahoo.com के पते पर मेल कर सकते हैं। **-महामंत्री**

मनुस्मृति

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

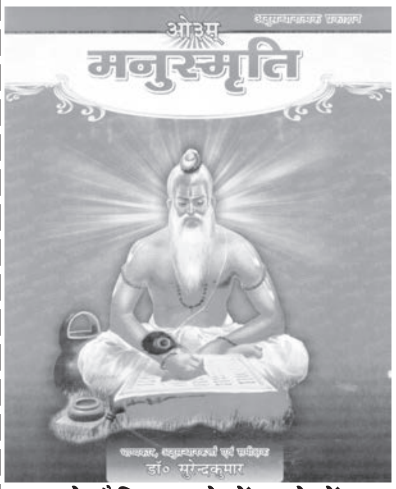

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

महर्षि दयानन्द कृत अर्थ एवं भावार्थ सहित

मूल्य : 600/-

विशेष छूट के साथ : 500/- में

(डाक व्यय अतिरिक्त)

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

पृष्ठ 4 का शेष

मनुष्य के ईश्वर के ...

बल मिलेगा- और मेरा अनुमान वेद के इस मन्त्र पर आश्रित है, अत: मिथ्या नहीं हो सकता। यह मन्त्र सत्य एवं पवित्र आचारण पर भी बल देता है।

उपस्थान मन्त्रों में अन्तिम मन्त्र है गुरु मन्त्र या गायत्री मन्त्र। यहां यह मन्त्र तीसरी बार आया है। प्रारम्भ में शिखा-बन्धन के समय, पुन: मनसापरिक्रमा मन्त्रों के पूर्व और यहां उपस्थान मन्त्रों के अन्त में, समर्पण के पूर्व। दरअसल वैदिक सन्ध्या में गुरुमन्त्र का वही स्थान है, जो मानव-शरीर में मेरुदण्ड का है। धारण, ध्यान और समाधि की स्थितियां इस गुरु मन्त्र में निहित हैं। उपस्थान मन्त्रों के पूर्व जो मन्त्र आये हैं, उनके द्वारा साधक यम, नियम, आसन और प्राणायाम की स्थितियों को पार कर चुका है। उपस्थान के मन्त्र उसे प्रत्याहार से समाधि की ओर ले जाते हैं। गुरुमन्त्र तक पहुंच कर साधक सामाधिस्थ हो जाता है और उसे ब्रह्म के पापनाशक तेज का साक्षात्कार होता है, ब्रह्म का दर्शन होता है और जिसे ब्रह्म का दर्शन हो गया उसे पाने को और शेष रह ही क्या जाता है? कुछ भी तो नहीं। समाधिस्थ हो जाने वाले उच्च कोटि के साधक अथवा पूर्ण योगी को तो गुरुमन्त्र तक पहुंचते-पहुंचते अखण्ड आनन्द की प्राप्ति हो जाती है, वह गद्‌गद और कृत्कृत्य हो जाता है, उसके मैं और तू के भेद मिट जाते हैं और उसकी स्थिति कुछ ऐसी हो जाती है-

यार की तस्वीर अपने दिल में है,
जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।

ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेने के उपरान्त, समाधि के टूटने पर सिद्ध साधक या योगी उस परम पिता परमात्मा के प्रति कृतज्ञता का अनुभव करता है और समाधि से उठने के पूर्व 'नमस्कार' मन्त्र के द्वारा उस सुख-स्वरूप, मंगलकारी, आनन्ददायक प्रभु को बारम्बार नमस्कार करता है।

ऊपर हमने उन सिद्ध साधकों या पूर्ण योगियों की दृष्टि से गुरुमन्त्र पर विचार किया है कि जो इसके द्वारा अपनी साधना से ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेते हैं। अब ज़रा इस मन्त्र पर उनकी दृष्टि से भी विचार कर लें कि जो अभी सद्‌गृहस्थ हैं, ब्रह्मचारी हैं और साधना की चरमावस्था पर नहीं पहुंचे हैं उनके लिए भी यह मन्त्र बड़ा काम का है, जपने योग्य है, विचारणीय-आचरणी है, सुबुद्धि को देने वाला है, शुभ-कर्मों में लगाने वाला है और ध्यान, धारणा, समाधि की ओर उन्मुख करने वाला है। सर्वरक्षक वह प्रभु प्राणदाता, दु:ख विनाशक, सुख स्वरूप और सृष्टिकर्त्ता है। वही सर्वश्रेष्ठ है, अत: वरण करने के योग्य है। उसी सविता देव का हम वरण करते हैं तथा उस परम प्रकाशक, शुद्ध-बुद्ध देव के पाप नाशक तेज (भर्ग:) को धारण करते हुए उससे यह प्रार्थना करते हैं कि वह सदैव हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग पर लगाये, हमारी बुद्धि को सत्कर्मो की प्रेरणा दे। गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए हम यह दृढ़ संकल्प लें कि हम परमेश्वर के उन प्रमुख गुणों को अपने जीवन में धारण करेंगे कि जिनका उल्लेख इस मन्त्र में हुआ है अर्थात् हम भी उसी के समान सर्वरक्षक बनेंगे, सब पर दया करेंगे, किसी को दु:ख न देंगे, सबको सुख पहुंचाएंगे, आचार-विचार को शुद्ध रखेंगे, पापों से दूर रहेंगे, सदैव शुभ-कर्म करेंगे तथा एक क्षण के लिए भी उस सविता देव को विस्मृत नहीं करेंगे। परम पिता परमात्मा हमें सुबुद्धि दे कि हम इन गुणों को अपने जीवन में धारण कर 'जप' के वास्तविक भाव को साकार कर सकें। (तज्जपस्तदर्थ भावनम्-योगदर्शन) तथा ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्य-कर्म की पूत्ति कर सकें।

बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

पृष्ठ 3 का शेष

को मौज मारने का अवसर न मिलेगा। फिर वे हमारे गुरु नहीं होंगे। इस विद्या और विषय में हम (ही) उनके गुरु होंगे।

हमारे आर्य भाई भी सदा से यज्ञ की महिमा देखते आए हैं। हिन्दुओं में अब भी चेचक, हैजा आदि में हवन कराया जाता है। यद्यपि इस समय विधिपूर्वक और यथेष्ट परिणाम में हवन न होने से यथेष्ट लाभ भी नहीं मिलता है। फिर भी इससे यज्ञ की प्राचीनता तो सिद्ध हो ही गयी। जहां कहीं विधिपूर्वक हवन कराए गए, वहां इस प्रकार के रोग नष्ट हो गए, क्योंकि हवन से वायुमण्डल एवं शरीर आदि के भी कृमियों का नाश होता है। जो रोग पैदा करते हैं। अब आप आज देख ही रहे हैं मूर्ति पूजा आदि के प्रचलित होने और उसी में सार्थकता मानने से पाप तो हुआ ही यज्ञ जैसा अनमोल रत्न का भी नाश हो गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी होम स्थल को ही देवालय उपदेश मंजरी में कहते हैं, मूर्ति पूजा के स्थान को नहीं। अत: वेद विरुद्ध कामों को सब छोड़ें और वेदानुकूल ही हवनादि को सदा करें। मैं सुखस्य मूल: धर्म: को 100 प्रतिशत सत्य मानता हूं। आज व्यक्ति पाप में अपादमस्तक डूबा पड़ा है। जैसे ज्वर से भूख नष्ट हो जाती है। वैसे पाप के संस्कार हवनादि दिव्य कार्यों से वंचित कर रहा है। पर No Way Out इहलोक के सब सुखों का कारण एकमात्र हवन आदि वैदिक कार्य ही है। अत: आओ मित्रो अभी से ही नित्य संस्कार विधि के ही अनुसार हवन आदि शुरू कर दें और नर तन सफल करें।

स्व. डॉ. अग्निहोत्री जी ने बाद में अवसर मिलने पर सरकारी सेनेटोरियम में यज्ञ चिकित्सा के परीक्षण किए थे जो क्षय रोगियों में 80 प्रतिशत तथा मलेरिया, मियादी ज्वर तथा अन्य प्रकार के ज्वर, प्लेग, हैजा, चेचक आदि पर शत-प्रतिशत सफल हुए।

-: साभार :-

'वेद एवं यज्ञ के अनंत लाभ'

प्रथम पृष्ठ का शेष

भेजकर यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि कश्मीर की फिजा में अमन का रंग भरने में केन्द्र लाचार है?

दरअसल कश्मीर की समस्या यह नहीं है न उसे अन्य राज्यों की तुलना में कुछ कम अधिकार मिले हैं कि जिससे वह अपनी समस्याओं का सही ढ़ंग से समाधान नहीं कर सके बल्कि उसकी समस्या दूसरी है कश्मीरियों की समस्या राष्ट्रीय नहीं बल्कि राजनैतिक है उन्हें स्वायत्तता जरूर मिलनी चाहिए लेकिन वह स्वायत्तता कट्टरपंथी मजहबी तंजीमों से मिलनी चाहिए, उनके भविष्य पर अपनी राजनैतिक रोटी सेकने वाले दलों से मिलनी चाहिए, पाकिस्तान की सरपरस्ती में लगे घाटी के अलगाववादी संघटनों से मिलनी चाहिये इसके अलावा वहां किसी भी स्वायत्तता की वकालत के मायने बेकार हैं। *- राजीव चौधरी*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 नवम्बर, 2017 से रविवार 12 नवम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 9–10 नवम्बर, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 नवम्बर, 2017

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का 95वां वार्षिकोत्सव 1 से 5 नवम्बर तक चतुर्वेदशतकीय यज्ञ के साथि सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वान डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी व डॉ. कर्णदेव शास्त्री ने ज्ञान की वर्षा की। वेद पाठ गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। सायंकालीन सत्र में श्रीमती सुमन आर्य जी ने समधुर भजन प्रस्तुत किये व डॉ. ज्वलंत शास्त्री जी ने जीवन की सफलता के लिए हम क्या करें तथा मानव जीवन पर कर्म का क्या प्रभाव पड़ता है एवं ईश्वर की भक्ति उपासना कैसे करें, पारिवारिक जीवन में सुखशान्ति कैसे हो और जीवन में संस्कारों का महत्त्व विषयों पर सारगर्भित प्रवचन किये।

5 नवम्बर को पूर्ण आहूति के पश्चात् डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने सुख की तलाश में भटकता इंसान एवं आचार्य श्यादेव जी ने युवा शक्ति एवं राष्ट्र निर्माण विषय पर अपने–अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर रतन लाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें कन्या गुरुकुल नरेला, आर्य पब्लिक स्कूल राजाबाजार, के विभिन्न बच्चों ने बड़े उत्साह पूर्वक भाग लिया।

श्री अरुण प्रकाश वर्मा प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड, ने सभी कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित आर्यमहानुभावों का धन्यवाद किया। शांति पाठ व ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–विजय दीक्षित, मंत्री

रतन लाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता में पुरस्कृत बच्चों के साथ आर्यसमाज के अधिकारी एवं निर्णायक मंडल के सदस्यगण

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज का YouTube टीवी चैनल

28 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

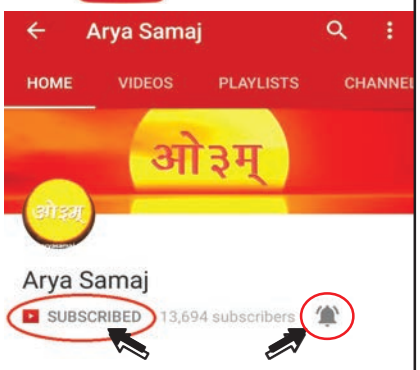

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें। आप अपने कार्यक्रमों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें।

- महामन्त्री

कैलेण्डर वर्ष 2018

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 23360150, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह